DR. PRITI RANJAN
Assistant Professor
H.D Jain College Ara

B.A Part - I

Paper - 1

Topic - Magadh Ka Uday.

मगध का उदय

मगध राज्य का विस्तार वर्तमान बिहार के दक्षिणी भाग में स्थित पटना और गया जिलों में था। इसके उत्तर और पश्चिम में क्रमशः गंगा और सोन नदियाँ सीमायें थी, दक्षिण में विन्ध्य पर्वत की श्रेणियाँ थी और पूर्व में चम्पा नदी थी। इसकी सर्वप्रथम राजधानी राजगीर के निकट गिरिव्रज या राजगृह थी। इसी नगर के और नाम - मगधपुर, वसुमति, कुशाग्रपुर और बिम्बिसारपुरी थे।

डॉ० एच० सी० रायचौधरी का मत है - "मगध का प्राचीन राजवंशीय इतिहास अन्धकारपूर्ण है। कहीं-कहीं योद्धा और राजनीतिज्ञ दिखाई दे जाते हैं जिनमें से कुछ तो शायद बिल्कुल ही काल्पनिक हैं और कुछ वास्तविक जैसा प्रतीत होता है। वास्तविक इतिहास हर्यंक (Haryanka) वंशी बिम्बिसार से आरम्भ होता है।"

ऋग्वेद में कीकट नामक एक प्रदेश का उल्लेख है जहाँ प्रमगन्द राज्य करता था। कीकट को मगध का ही नाम समझा गया है। अथर्ववेद में एक प्रार्थना है कि बीमारी मगध को जाये। यजुर्वेद में भी मगध के भाटों का उल्लेख मिलता है।

बृहद्रथ वंश → महाभारत और पुराणों में लिखा है कि मगध के प्राचीनतम राजवंश की स्थापना बृहद्रथ ने की जो जरासन्ध का पिता और वसु का पुत्र था। बृहद्रथ वंश की कुल अवधि 723 या 1000 वर्ष निश्चित की गई है। पुराणों में दी गई राजाओं

का काल - सारणी और उनके राज्यों का क्रम सम्भवतः ठीक नहीं है, क्योंकि इसकी कोई पुष्टि प्राप्त नहीं होती।

मगध्य साम्राज्यवाद का उदय व विस्तार

प्राक् मौर्य युगीन भारतीय राजनीति की एक महत्वपूर्ण घटना है, अपने समकालीन 16 महाजनपदों में मगध्य ने सबको पीछे छोड़कर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इस मगध्य साम्राज्य के उत्कर्ष में उनके भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक कारणों ने योगदान दिया।

भौगोलिक स्थिति ⇒ मगध्य मध्य गंगा घाटी के क्षेत्र में अवस्थित था। इसकी दोनों ही राजधानियाँ - राजगृह एवं पाटलिपुत्र सामरिक दृष्टि से सुरक्षित थी। राजगृह चारो तरफ से पहाड़ियों से घिरा था, तथा यहाँ पर्याप्त जंगल संसाधन की उपलब्धता थी। यहाँ के जंगलों लौह खनिज एवं तांबा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। यहाँ के जंगलों में बड़ी संख्या में हाथियों की उपलब्धता थी। यह क्षेत्र जनसंख्या बाहुल्य क्षेत्र था। अतः श्रम आवश्यकता की पूर्ति सहज ठीक तरीके से हो गई। बाद में मगध्य की राजधानी पाटलिपुत्र बन जाती है, यह नगर गंगा - गंडक व सोन के मुहाने पर स्थित था। सरयू और पुनपुन नदियाँ भी इसके इर्द-गिर्द ही थी। इस तरह पाटलिपुत्र प्राकृतिक सुरक्षा से युक्त था। यहाँ की मृदा जलोढ़, जो कृषि की दृष्टि से अत्यंत उपजाऊ थी। इस प्रकार मगध्य के पास एक विस्तृत उपजाऊ क्षेत्र उपलब्ध था।

इस वैवाहिक संबंध से एक फायदा यह हुआ कि कोशल एवं वत्स के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध थे एवं कोशल से संबंध के कारण अब वत्स की ओर से मगध पर आक्रमण का खतरा जाता रहा।

मद्र की राजकुमारी खेमा के साथ विवाह कर उसने मगध के विस्तार में मद्रों का सहयोग प्राप्त किया।

बिम्बिसार ने लिच्छवी राजकुमारी चेलना से विवाह किया इससे यह फायदा हुआ कि उत्तर की ओर से जो आक्रमण होते थे जिससे मगध में अशांति की स्थिति थी उसकी समाप्ति हो गई। इतर बात लिच्छवी की राजधानी वैशाली एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था व नदी व्यापार पर इसका प्रत्यक्ष नियंत्रण था। फलत: मगध को व्यापारिक सुविधा भी प्राप्त हुई।

कूटनीतिक संबंधों की नीति :-

बिम्बिसार के सिंहासनारोहण के समय मगध की स्थिति अच्छी नहीं थी। उसके आस-पास के शासक अपनी शक्ति के विस्तार में लगे हुए थे। वज्जि संघ जो मगध के उत्तर में स्थित था का सैन्य विस्तार हो रहा था। कोशल और अवंति विस्तार कर रहे थे। इन स्थितियों में बिम्बिसार ने कूटनीतिक संबंधों की नीति अपनाई और इन राज्यों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए। बिम्बिसार ने अवन्ति, गांधार एवं रोरुक (सिंध) के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किया।